श्री दुर्गा जी की आरती

ॐ जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामा गौरी ।
तुमको निशदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिवरी ।। ॐ जय...।।
माँग सिन्दूर विराजत टीको मृगमद को ।
उज्जवल से दोऊ नैना चन्द्रबदन नीको ।। ॐ जय...।।
कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै ।
रक्तपुष्प गले माला कण्ठन पर साजै ।। ॐ जय...।।
केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्परधारी ।
सुर-नर-मुनि-जन सेवत तिनके दुखहारी ।। ॐ जय...।।
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती ।
कोटिक चन्द्र दिवाकर सम राजत ज्योति ।। ॐ जय...।।
शुम्भ-निशुम्भ बिदारे, महिषासुर घाती ।
धूम्र विलोचन नैना निशिदिन मदमाती ।। ॐ जय...।।
चण्ड-मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे ।
मधु-कैटभ दोउ मारे सुर भयहीन करे ।। ॐ जय...।।
ब्रह्माणी रुद्राणी तुम कमला रानी ।
आगम-निगम बखानी तुम शिव पटरानी ।। ॐ जय...।।
चौंसठ योगिनी गावत नृत्य करत भैरूँ ।
बाजत ताल मृदंगा और बाजत डमरु ।। ॐ जय...।।
तुम ही जग की माता तुम ही हो भरता ।
भक्तन की दु:ख हरता सुख सम्पत्ति करता ।। ॐ जय...।।
भुजा चार अति शोभित, वर-मुद्रा धारी ।
मनवान्छित फल पावत सेवत नर-नारी ।। ॐ जय...।।
कन्चन थाल विराजत, अगर कपूर बाती ।
श्रीमालकेतु में राजत कोटि रतन ज्योति ।। ॐ जय...।।
श्री अम्बेजी की आरती, जो कोई नर गावै ।
कहत शिवानन्द स्वामी सुख सम्पत्ति पावै ।। ॐ जय...।।
जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामा गौरी ।
तुमको निशिदिन ध्यावत तुमको निशिदिन ध्यावत।
हरि ब्रह्म शिवरी ॐ जय अम्बे गौरी।।